॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीयुगलस्तवविंशतिः

– रचयिता –

अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज

भगवान् श्रीराधामाधव-श्रीसर्वेश्वर प्रभु

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
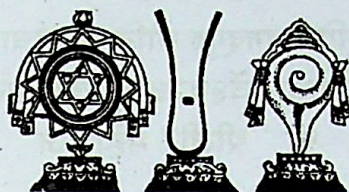
* श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः *

श्रीयुगलस्तवविंशतिः

रचयिता-

अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराजः

अखिलभारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

(सलेमाबाद) किशनगढ (राज०)

भाषाकार-

पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त'

धर्मशास्त्री पुराणतीर्थ द्वैताद्वैत विशारद

ग्रन्थ प्रणेता-

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

भाषाकार-

पं० श्रीगोविन्ददास 'सन्त'

प्रकाशक-

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ (राज०)

फोन नं. ०१४६७ - २२७८३१

प्रकाशन तिथि-

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा (रक्षा बन्धन पर्व)

मङ्गलवार वि० सं० - २०४३

निम्बार्काब्द - ५०८०

दिनाङ्क १९ अगस्त १९८६

द्वितीयावृत्ति

वि० सं० - २०६३

निम्बार्काब्द - ५१०१

न्यौछावर-

दश रुपये

मुद्रक-

श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ - सलेमाबाद

आमुख

परात्पर परब्रह्म भगवान् श्रीसर्वेश्वर परम कृपामय हैं, दयार्णव हैं, वे अपनी अहैतुकी कृपावृष्टि से अनन्त-अनन्त प्राणियों को अपनी दुर्लभ प्रपन्नता प्रदान करते हैं । यदि जीवात्मा मनसा, वाचा, कर्मणा उनकी उपासना में प्रवृत्त हो जाय तो वे कृपैकलभ्य प्रभु उन पर अपनी कृपा-वृष्टि निःसन्देह करते ही हैं ।

उन अखिलान्तरात्मा सर्वेश्वर की उपासनाओं का स्वरूप विभिन्न-रूपात्मक है । कोई धारणा, ध्यान, समाधि आदि का आश्रय लेते हैं तो कोई ज्ञान का अवलम्ब लेते हैं तो कोई कृच्छ्र-तप द्वारा उनकी उपासना करते हैं । किन्तु इन सभी उपासनाओं में शास्त्रों के सम्यक् आलोडन से उन श्रीहरि की कृपा-प्राप्ति के लिये नवधा भक्ति ही सर्वोत्तम है और उसमें भी स्मरण-भक्ति सर्वसुलभ और सर्वोपादेय है । उन सर्वान्तरात्मा का स्मरण शास्त्र-चिन्तन से, सत्सङ्ग से, भगवत्परिचर्या आदि से किया जाता है, इनमें भी मंगलमय सरस स्तवों से श्रीप्रभु का स्मरण किया जाय तो यह और सुलभतम,, सर्वश्रेष्ठ उपासना की सर्वग्राह्य विधि है । गीता में श्रीमुख वचन का यह दिव्य उपदेश भी स्मरण-भक्ति का ही प्रतिपादक है ।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।।

अत एव स्मरण-भक्ति विशेष उपादेय है । इसी स्मरणात्मक भक्ति को अपने अन्तःकरण में प्रतिष्ठित करने के लिये अपने सभी पूर्वाचार्यवर्यों ने अपने पावन स्तोत्रों द्वारा श्रीसर्वेश्वर का स्तवन किया है । इसी परम्परानुसार वर्तमान आचार्यश्री ने "श्रीयुगलस्तवविंशतिः" का प्रणयन किया है । भावुक श्रद्धालु भगवद्भक्तजन इस ग्रन्थ के स्तवों द्वारा श्रीप्रभु की मधुर उपासना कर अपना परमहित कर सकेंगे ऐसा हमें दृढ विश्वास है ।

—व्रजवल्लभशरण—वेदान्ताचार्य, पञ्चतीर्थ

दि० १९/८/१९८६ अधिकारी श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

✻ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ✻

समर्पणम्

सर्वेश्वरप्रभुं नत्वा श्रीराधामाधवाङ्घ्रिषु ।
मया समर्प्यते भक्त्या ''युगलस्तवविंशतिः'' ॥१॥

नास्ति विद्या बलं किञ्चिन्न कवित्वं नवा मतिः ।
रचना यादृशी जाता त्वत्प्रसादादियं यथा ॥२॥

अर्प्यते सा च सोत्साहं मासेऽस्मिन् श्रावणे शुभे ।
पूर्णिमापर्वणि प्रेम्णा मङ्गलवासरे दिने ॥३॥

धाम्नि वृन्दावने रम्ये श्रीनिकुञ्जे पुरातने ।
विद्वत्सभासमक्षे च ''श्रीयुगलस्तवविंशतिः'' ॥४॥

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा, मंगलवारः
वि० सं० २०४३
दि० १९/८/१९८६

समर्पकः
श्रीयुगलकृपाभिलाषी
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

प्राक्कथन

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक करुणावरुणालय भक्तवाञ्छाकल्पतरु सर्वान्तिर्यामी सर्वाधार सर्वनियन्ता सर्वेश्वर श्रीहरि की समाराधना के लिये स्तवों का माध्यम सबसे सुन्दर और सर्वाधिक श्रेष्ठ है । स्तव परम्परा बहुत ही प्राचीन है । वेद-पुराणादि सच्छास्त्रों में स्तवों का बाहुल्य है । इसी प्रकार पूर्वाचार्यों की दिव्य कृतियों (रचनाओं) में भी स्तवों की बहुलता हैं । स्तोत्रों में संक्षिप्त तथा भाव-गाम्भीर्य स्वरूप वर्णन एवं जो अनुपम लालित्य आता है, यह निश्चय ही अनुपम होता है ।

श्रीचक्रसुदर्शनावतार भगवान् श्रीनिम्बार्क ने "वेदान्त कामधेनु" (दश-श्लोकी) "श्रीराधाष्टक" एवं श्रीप्रातःस्तवराज" आदि स्तोत्रों से जो गागर में सागर का रूप दिया है, वह बड़ा ही उत्कृष्ट और परम सरस है ।

वर्तमान आचार्यचरण अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठाधीश्वर श्री "श्रीजी" श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने भी अनेक स्तव ग्रन्थों की रचना कर श्रीनिम्बार्क-साहित्य का जो अभिवर्धन किया है, वह निश्चय ही परम गौरवास्पद है ।

यह प्रस्तुत ग्रन्थ "श्रीयुगलस्तवविंशतिः" जिसमें बीस स्तोत्र हैं प्रकाशित होकर भक्तजनों के कर-कमलों में पहुँच रहा है । आचार्यश्री की आज्ञानुसार आपके अन्य कतिपय ग्रन्थों की भाँति इस ग्रन्थ का भी इस किंकर ने भाषानुवाद कर दिया है, जिससे जन साधारण को समझने में बड़ी सुगमता रहेगी ।

अनुवाद में कदाचित् भावदर्शन, प्रतिपादन आदि की त्रुटियाँ रही हों तो पाठक महानुभाव विद्वज्जन उसे सुधारकर अनुशीलन करेंगे ।

आचार्यश्री की अनेक कृतियों में यह कृति भी बड़ी ही सरस, मधुर एवं परमोपादेय है । साधक भक्तजनों के प्रति मेरी यह अपनी मान्यता है कि इन बीस स्तवों का भावपूर्ण मनन कर अवश्य ही लाभान्वित होंगे ।

श्रीमदाचार्यरचिता युगलस्तवविंशतिः ।
सन्त-गोविन्ददासेन पीठप्रचारमन्त्रिणा ।।
श्रीमदाज्ञानुसारेण श्रीयुग्मरसवर्धिनी ।
सर्वजनहितार्थाय हिन्दीभाषा मया कृता ।।

विनीत--टीकाकार - पं० गोविन्ददास 'सन्त'

हृदयोद्गार

अनादिवैदिकसत्सम्प्रदाये श्रीनिम्बार्कसम्प्रदाये आचार्यपीठाधिष्ठितानामाद्याचार्यमारभ्य भाष्यकारश्रीनिवास-पुरुषोत्तम-देवाचार्य-सुन्दरभट्ट-केशवकाश्मीरिभट्टाचार्याद्यनेकेषामाचार्यवर्याणामात्मपरमात्ममुक्तिस्वरूपोपदर्शकाः कर्मज्ञानप्रपत्यादितत्त्वविवेचकाश्चानेके संस्कृतनिबद्धाः निबन्धाः निभाल्यन्ते । यैरेव प्रामाणिकः साम्प्रदायिको राद्धान्तः अवगन्तुं शक्यते सुधीभिर्जिज्ञासुभिः ।

परम्परायामस्यां साम्प्रतमाचार्यपीठे विराजमाना अनन्त श्रीविभूषिता जगद्गुरव आचार्याः श्रीश्रीजीमहाराजाः, अप्यनेकान् कर्मज्ञानभक्ति-प्रतिपादकान् भगवति दिव्यानुरागवर्धकांश्च सुरभारतीभाषानिबद्धान् ग्रन्थान् विरचय्य सम्प्रदायेन सदैव अन्येषामपि कोटि-कोटिमुमुक्षूणां प्रेमपरोत्सूनां विरलानां रसिकानां च महान्तमुपकारमकार्षुरिति नापरोक्षं निर्मत्सराणां विदुषाम् ।

महाराजश्रीणां प्रायः सर्वाण्यपि प्रकाशितानि प्रेममयानि पुस्तकानि मया निभालितानि निभाल्यन्ते च यदा कदापि । ताः सर्वा अपि पूज्यचरणानां तेषां कृतयः पूर्वाचार्यपरम्परां श्रुतिस्मृतिपरम्परां चानुसृत्यैव निवद्धा भावुकानां निर्मत्सराणां निर्मलेऽन्तः करणे युगलप्रीतिं तत्प्रत्यये च समेधयन्तीति सहृदयहृदयसाक्षिकम् ।

अधुना प्रकाश्यमानं विंशत्यष्टकात्मकं श्रीयुगलविंशतिस्तवाख्यं सरसं ग्रन्थमपि किञ्चन्यभालयम् । एष्वष्टकेषु कतिपयाष्टकं सूरिभिरद्याप्यस्पृष्टमेव । इमानि सर्वाण्यष्टकानि प्रेमभक्तिविवर्धकानीत्यत्र न स्वल्पोऽपि विचिकित्सावकाशः ।

श्रद्धेया आचार्यचरणाः प्रार्थ्यन्ते यत्ते एवंविधमेकं निबन्धं निबध्नीयुर्येन कालप्रभावेण विदूषिता सम्प्रदायस्य श्रौतोपासना श्रौताचारविचाराश्च पुनः जनमानसे सुप्रतिष्ठिताः सन्तः सम्प्रदायस्य वैदिकतां पुनर्जगति जागरयेयुरितिशम् ।

श्रीचरणानामेव

वैद्यनाथ झा, राष्ट्रपतिपुरस्कृतः
व्या० वे० आ० (शांकर निम्बार्क) प्राचार्यः
एम. ए. साहित्यरत्न - श्रीनिम्बार्क संस्कृत महाविद्यालयः श्रीवृन्दावनम्

स्तव - उपादेयता

यह जागतिक जीव उन सच्चिदानन्द आनन्दकन्द मुकुन्दमाधव रसविग्रह भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का ही अंश है । और आनन्दमय होने के कारण सतत आनन्द की खोज करता रहता है, किन्तु आनन्दाभास इस जगत् में इसे आनन्द नहीं मिलता, अपितु दुःखाद् दुःखं भयाद्भयम् वाली स्थिति इसके सामने आ जाती है । किन्तु जब जीवपर कृपावतार श्रीगुरुदेव अकारण अपनी कृपा-कादम्बिनी का अपने सदुपदेशों के द्वारा अभिवर्षण करते हैं, तब ही संसार ताप संतप्त इस जीव की समग्र व्याधियों का सम्यक् शमन होता है । और प्रवृत्ति से पराङ्मुख होकर निवृत्ति-सुख का रसास्वादन करता है । श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य श्रीवेदान्त कामधेनु नामक दिव्य दार्शनिक ग्रन्थ में सूत्ररूप से संकेत कर रहे हैं कि (नान्या गतिःकृष्णपदारविन्दात्) अर्थात्-आनन्दमय श्रीकृष्ण के चरणारविन्दों के बिना जीव का कहीं पर भी कल्याण नहीं होता और न उसे शाश्वत सुख की ही अनुभूति होती हैं । अतः प्रभु आराधना ही जीवका कर्तव्य एवं लक्ष्य है । अब रहा आराधना किस विधा से की जाय, इसका भी सरल समाधान श्रीनिम्बार्क भगवान् उक्त इसी ग्रन्थ में ही संकेत करते हैं कि-- ''उपासनीयं नितरां जनैः सदा'' अर्थात् जीव को सदा, सर्वदा, निरन्तर, प्रभु पादपद्मों की उपासना करनी चाहिये। किस पद्धति से इसमें सभी वैष्णव शास्त्र समवेत स्वर से श्रवण कीर्तन स्मरण, स्वाध्यायादि को उपासना का प्रशस्त मार्ग बताते हैं । और इनमें स्तव पाठ आदि का प्रमुख स्थान है, जिन स्तवों के पठन मात्र से ही लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती हैं । इसी जन-कल्याण की पुनीत भावना को लेकर प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन वर्तमान जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ (राजस्थान) ने अपने स्वरचित संस्कृत साहित्य के अनेक भक्ति परक ग्रन्थरत्नों में यह एक ''श्रीयुगलस्तवविंशति'' नामक ग्रन्थरत्न की रचना की है, इसमें व्रजभूमि के आराध्यप्रिया प्रियतम का स्तवन एवं श्रीगिरिराज, श्रीराधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ललिताकुण्ड आदि के स्तवों की परम सरस रचनायें हैं। इसके नित्य पठनादि से जीव संकट मुक्त होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है, यह ग्रन्थरत्न मानव जीवन के लिये परम उपादेय सिद्ध होगा । ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है ।

चरण-किंकर

मुरलीधर शास्त्री (प्रेम सरोवर) गाजीपुर बरसाना

स्तवैः कीर्तनीयो हरिः

श्रुति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादिप्रतिपादित-कीर्तनभक्त्याः परमोत्कृष्टत्वं वरीवर्ति । तत्र खलु कीर्तनभक्त्यामपि श्रीभगवन्नाम-संकीर्तनं, सर्वेश्वर-श्रीराधामाधवचरितामृतरसभरितपद्यात्मकशास्त्रगानं राग-लयपूर्वकं सुरभारती-रचितस्तवपाठादिकमपि चाऽलोक्यते ।

यदा हि श्रीभगवद्भक्तिनिर्झरायमाणानां श्रीयुगलरसास्वादप्रदानां दिव्य-तमानां स्तोत्राणां सश्रद्धं सभक्ति रसिकभक्तै र्मङ्गलमयो घोषो निजकलित-कण्ठेन विधीयते तदाऽखिलरसामृतसिंधुरूपो नवयुगलकिशोरः श्रीराधासर्वेश्वरः स्तवकीर्तनं श्रावं श्रावं प्रभवति परमपुलकितोऽकम्पानुकम्पाञ्च विदधाति परमकरुणावरुणालयोऽनन्तकृपाकोषः ।

न चाऽयं लेखनमात्रविषयोऽपितु प्रत्यक्षरूपेणाऽपि दरीदृश्यतेऽस्मि-न्धराधाम्नि । यथा हि परमप्रख्यात-रससिद्धकविश्रीजयदेवनिर्झरिताऽति-ललितगीतगोविन्दकीर्तनिनाऽनेके प्रभुभक्ताः श्रीराधामाधवकृपाभाजिनी भूताः प्राभवन् । श्रीमद्भागवते भक्ताग्रगण्यश्रीप्रह्लादस्य कीर्तनभक्तिस्तु लोकप्रसिद्धैव । कीर्तनभक्तिरसिकाचार्यवर्यो विपञ्चीकरकञ्जो देवर्षिश्रीनारदस्तु प्रतिक्षणं प्रचारयति रसमयीं कीर्तनभक्तिम् । आद्याचार्यवर्येण सुदर्शनचक्रावतारेण भगवता श्रीनिम्बार्काचार्यवर्येण स्वप्रणीतश्रीराधाष्टकस्तोत्रे श्रीनामकीर्तनभक्तिरेव समुपदिश्यते निम्नाङ्कितपद्येन--

सदा राधिकानाम जिह्वाग्रतः स्यात्
सदा राधिकारूपमक्ष्यग्र आस्ताम् ।
श्रुतौ राधिकाकीर्त्तिरन्तः स्वभावे
गुणा राधिकायाः श्रिया एतदीहे ॥

पूर्वाचार्यचरणैः प्रणीतानि सन्ति विविधानि संस्कृतस्तोत्राणि भाषा-पद्यान्यपि तेषु च स्तवैराराध्यते श्रीराधासर्वेश्वरः । तत्सरणिमनुसृत्यैवाऽस्मा-भिरपि स्तवात्मकोऽयं ''श्रीयुगलस्तवविंशतिः'' इत्यारख्यो ग्रन्थो व्यरचि स्वान्तः सुखाय रसिकभक्तजनहितार्थञ्च । यद्यपि नाऽस्माकं किमप्यस्ति सर्वमिदं सर्वेश्वरश्रीराधामाधवप्रभोरनुग्रहरूपात्मकमितिशम् ।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा-मङ्गलवासरः — श्रीयुगलराधाकृष्णकृपाकामः-
वि. सं. २०४३, दि. १९/८/१९८६ — श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

विषय - सूची

*

अकारादिक्रमेण श्लोकानुक्रमणिका

*

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरुश्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज-

द्वारा विरचित-

श्रीयुगलस्तवविंशतिः

राधासर्वेश्वरं नत्वा श्रीहंस - सनकादिकान् ।
देवर्षिं नारदं वन्दे पराभक्तिप्रचारकम् ॥१॥

श्रीमज्जगद्गुरुं नौमि निम्बार्काचार्यदेशिकम् ।
सर्वाचार्यांश्च सश्रद्धं सर्वेश्वरार्चनारतान् ॥२॥

बालकृष्णाभिधाचार्यं शरणदेवमञ्चितम् ।
गोपालमन्त्रराजस्यानुष्ठानाभिपरायणम् ॥३॥

निम्बार्काचार्यसत्पीठमलंकृतञ्च येनाऽहम् ।
तं गुरुदेवमाचार्यं प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥४॥

यत्कृपया मया लब्धा सर्वेश्वरे रतिर्मतिः ।
तं कृपाकरुणापूर्णं वन्दे स्वाचार्यसद्गुरुम् ॥५॥

प्रणम्य सकलाचार्यान् युगलस्तवविंशतिः ।
विरच्यते मया भक्त्या सर्वेश्वरप्रसादतः ॥६॥

श्रीराधाष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णाऽऽराधितां राधां श्रीवनकुञ्ज-राजिताम् ॥
सौन्दर्य-सार-सर्वस्वां भावये मधुर-स्मिताम् ॥

(२)

सखी-वृन्द-समाराध्यां कालिन्दी-तीर-शोभिताम् ॥
कोकिला-कीर-संगीतां भावये राधिकां सदा ॥

(३)

प्रेम-सरोवरोद्भूतां राधां दिव्य-सुखावहाम् ॥
परा-भक्ति-प्रदां पूर्णां भावये वृषभानुजाम् ॥

(४)

रासेश्वरीं रसाऽऽधारां रसिकैः समुपासिताम् ॥
महारम्यां प्रियां राधां भावये मनसाऽनिशम् ॥

(५)

विधि-रुद्रेन्द्र-सद्देवैरन्विष्टामपि दुर्लभाम् ॥
किशोरीं राधिकां देवीं भावये मधुरां श्रियम् ॥

(६)

माधुर्याऽमृतसद्धारां दिव्याऽऽनन्द-रस-प्रदाम् ॥
श्रुति-तन्त्रैः समुद्गीतां भावये राधिकां श्रियम् ॥

(७)

भवाग्नि-भीषण-ज्वाला-माला-तापापहारिणीम् ॥
सुधा-कादम्बिनीरूपां भावये राधिकां श्रियम् ॥

श्रीराधाष्टक

(१)

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र द्वारा समाराधित, श्रीवृन्दावन की कुञ्ज में परम शोभायमान और सौन्दर्य की सार सर्वस्व, मधुर मन्दहास्य से युक्त श्रीराधिका जी की हम भावना करते हैं ।

(२)

सखी समूह द्वारा सम्पूजित, श्रीयमुनाजी के तट पर परम शोभायमान कोयल और तोता आदि पक्षी गणों से गीयमान ऐसी श्रीराधिकाजी का हम सदा ही भावपूर्वक स्मरण करते हैं ।

(३)

वरसाना स्थित प्रेम सरोवर में प्रादुर्भूत, दिव्य सुख **एवं पराभक्ति** प्रदान करने वाली पूर्ण रस ब्रह्म स्वरूपा वृषभानुजा श्रीराधिकाजी की हम भावना करते हैं ।

(४)

रासेश्वरी तथा रास-रस की आधार भूत, रसिकजनों द्वारा परिसेवित परम मनोहर कृष्ण प्रिया श्रीराधिकाजी की हम निरन्तर भावना (उपासना) करते हैं ।

(५)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि श्रेष्ठ देवों द्वारा अन्वेषण (ढूँढना) जिनका परम दुर्लभ है ऐसी प्रेमस्वरूपा प्रियतमा किशोरी रसस्वरूपा-देवी श्रीराधिकाजी की हम भावना करते हैं ।

(६)

माधुर्य और अमृत की श्रेष्ठ धारा और परमानन्द रस प्रदान करने वाले वेद शास्त्र और तन्त्र शास्त्रों द्वारा परिवर्णित श्रीराधिकाजी की हम प्रसन्नता पूर्वक भावना करते हैं ।

(७)

संसार दावानल की भयङ्कर ज्वाला पुञ्ज के संताप को हरण करने वाली अमृत स्वरूपा कल्याण कारिणी श्रीराधिकाजी की हम भावना करते हैं।

(८)

वृन्दावन-महाशोभां शुभ्राम्भोजे विराजिताम् ।।
कृष्ण-प्रियां परां राधां भावये करुणामयीम् ।।

(९)

राधाष्टकं रसस्तोत्रं राधा-भक्ति-प्रदायकम् ।।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

श्रीराधारसाष्टकम्

(१)

श्रीराधां राधिकां नौमि रसिकां रासलासिनीम् ।
रासेश्वरीं रसाऽधारां रसिकेश्वरवल्लभाम् ।।

(२)

रसमयीं रसाऽगारां रुचिरां रूपसागराम् ।
रत्नमालाधरां राधां वन्दे माधुर्यनिर्झराम् ।।

(३)

रससुधामहाधारां राकेशादपिसौभगाम् ।
रासलास्यवरां वन्दे रक्ताब्जरदनच्छदाम् ।।

(४)

रतिकोटिवरां रुच्यां रासलीलाकरीं श्रियम् ।
रविजातीरसञ्चारां राधां नौमि वरप्रदाम् ।।

(५)

रसकुञ्जे भजे राधां रमया चारु वन्दिताम् ।
रसालां रमणीरम्यां रसजीवनजीवनाम् ।।

(८)

श्रीवृन्दावनधाम की शोभा स्वरूप दिव्य धवल कमल पुष्प पर शोभा-यमान कृष्ण-प्रिया परात्पर करुणामयी श्रीराधिकाजी की हम भावना करते हैं।

(६)

श्रीराधिकाजी की भक्ति प्रदान करने वाला रस-स्तोत्र श्रीराधाष्टक जिसका आचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया । *

श्रीराधारसाष्टक

(१)

रसिकेश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र की परमप्रिया, रासेश्वरी, रस की आधार स्वरूपा, रास में परम शोभायमान श्री राधा (राधिका) को हम नमस्कार करते हैं ।

(२)

माधुर्य रस से निर्झरित, रत्न माला को धारण करने वाली, रूप की सागर, रस की आगार, परम सुन्दर, रसमयी श्री राधिका जी की हम वन्दना करते हैं ।

(३)

रस रूप अमृत की महाधारा, चन्द्रमा से भी बढ कर सुशोभित, रास के नृत्य में परम श्रेष्ठ, ताम्बूल (पान) के सेवन से लाल कमल के समान है दन्त पंक्ति की शोभा जिनकी ऐसी श्रीराधिकाजी की हम वन्दना करते हैं ।

(४)

करोड़ों रति (काम पत्नी) से भी बढ कर है सुन्दरता जिनकी रासलीला करने में तत्पर श्रीस्वरूपा और श्रीयमुनाजी की तीर पर विहरण करने वाली वर प्रदायिका श्रीराधिकाजी को हम नमस्कार करते हैं ।

(५)

रस जीवन की जीवन, रमणियों अर्थात् सखीजनों के सौन्दर्य से कोटिगुणाधिक परम श्रेष्ठ, रस स्वरूपा, रस कुंज में विहार करने वाली ऐश्वर्या-धिष्ठात्री देवी श्रीलक्ष्मीजी द्वारा सर्वविध रूप से परम वन्दनीया श्रीराधिकाजी का हम भजन करतें हैं ।

(६)

राजीवनयनां नौमि रोचनचन्दनाऽङ्किताम् ।
रङ्गदेवीसदासेव्यां रासोल्लासप्रदायिनीम् ।।

(७)

रसवृन्दावनाऽधीशां रसिकां नौमि राधिकाम् ।
ऋषीश्वरैः समाराध्यां रणच्चरणनूपुराम् ।।

(८)

श्रुतिमन्त्रार्थसम्पाद्यां श्रीकृष्णमुरलीकराम् ।
राधारमणसम्मोहां रजतासनराजिताम् ।।

(९)

राधारसाष्टकं दिव्यं राधामाधवभक्तिदम् ।।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

श्रीराधाप्रियाष्टकम्

(१)

नित्यधाम्नि नवकेलितत्परां
दिव्यभव्य-यमुनातटप्रियाम् ।
कुञ्जकृष्णशुभवामशोभितां
राधिकां सरससौभगां भजे ।।

(२)

ब्रह्म-रुद्र-सुरवृन्दवन्दिता-
मद्भुताभिनवहर्षदां सदा ।
धीरमानससुमृग्यदुर्लभां
राधिकां सरससौभगां भजे ।।

(६)

कमल दल के समान नेत्र वाली, सुन्दर चन्दन से चर्चित सखीप्रमुख श्रीरङ्गदेवजी द्वारा समाराधित रास-रस-प्रदायिनी श्रीराधिकाजी को हम नमस्कार करते हैं ।

(७)

अपने श्रीचरणाविन्दों के नूपुर ध्वनि से परम शोभायमान ऋषीश्वरों द्वारा स्मराधित रसनिधि रस-वृन्दावनाधीश्वरी श्रीराधाजी को हम नमस्कार करते हैं ।

(८)

रजतमय सुन्दर सिंहासन पर विराजमान सर्वेश्वर श्रीराधारमण को संमोहित करने वाली लीला प्रसङ्ग में श्रीकृष्ण चन्द्र की मुरली को निज कर-कमलों में धारण करने वाली वेद मन्त्रों द्वारा गीयमान श्रीराधिकाजी की हम वन्दना करते हैं ।

(९)

श्रीराधामाधव की भक्ति प्रदान करने वाले इस दिव्य श्रीराधा रसाष्टक स्तोत्र की आचार्यप्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरदेवाचार्यजी महाराज ने रचना की ।

*

श्रीराधाप्रियाष्टक

(१)

नित्य धाम (श्रीवृन्दावन) में नूतन लीला में तत्पर, दिव्य विशाल श्रीयमुनाजी का सुरम्य तट ही जिनको अतिप्रिय है तथा कुञ्ज में प्रियतम श्रीकृष्ण के वाम भाग में सुशोभित सरस सुभग श्रीराधिकाजी का भजन स्मरण करते हैं ।

(२)

ब्रह्मा, शिव और इन्द्रादि समस्त देव वृन्दों द्वारा वन्दनीय और सदा ही अद्भुत अभिनव आनन्द प्रदान करने वाली धीर पुरुषों द्वारा तपःपूर्वक अन्वेषण किये जाने पर भी परम दुर्लभ ऐसी सरस सुभग श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(३)

सर्वदा व्रजनिकुञ्जमन्दिरे
किङ्करीपरिकरै र्मनोहरैः ।
सेवितां स्मितमुखाम्बुजां मुहू
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(४)

मालतीकुसुमहारमञ्जुलां
दर्शनीयशुभहस्तपंकजाम् ।
अर्चनीयचरणाम्बुजामहो
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(५)

दिव्यकेलिनवरासमण्डले
माधवेन सह लास्य-सोत्सुकाम् ।
आलिभिश्च रसकेलिभाविता
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(६)

युग्मभक्ति-रसभाव-भावितैः
शास्त्रविद्भिरनिशं समीडिताम् ।
ध्यानयोगनिरतै रसेश्वरीं
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(७)

ज्ञानविद्भिरमितैः सुदुर्लभां
नित्यधामधरणौ रसावहाम् ।
प्रेमभक्तिसुलभां कृपाकरीं
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(३)

श्रीव्रज-निकुञ्ज मन्दिर (महल) में मनोहर सखी समूह द्वारा सर्वदा परिसेवित और प्रतिक्षण विकसित कमल-पुष्प के समान मंद हास्ययुक्त मुखार-विन्द है जिनका ऐसी सरस सुभग श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं।

(४)

अति मनोहर मालती पुष्पहार से सुशोभित तथा दर्शनीय मङ्गलमय अपने हस्त-कमल में कमलपुष्प को धारण किये हुए परम अर्चनीय चरण-कमल जिनके ऐसी परम आश्चर्यमयी श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(५)

दिव्य लीलामय नूतन रामण्डल में माधव (भगवान् श्रीकृष्ण) के साथ उत्सुक हुई परम शोभायमान और रसमयी लीलाओं से विभोर हुई सखी समूह के सहित परम मनोहारिणी श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं।

(६)

युगल (श्रीप्रिया-प्रियतम) भक्ति रस में भाव-विभोर हुये ध्यान योग परायण, शास्त्र-वेत्ता विद्वानों द्वारा प्रतिदिन सम्प्रार्थित रसाधीश्वरी रसघन रूप परम सुभगा श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(७)

अमित (अपार) है ज्ञान जिनमें ऐसे ज्ञानी जनों द्वारा भी प्राप्त करने में अत्यन्त दुर्लभ, श्रीवृन्दावन धाम की वसुन्धरा पर रस प्रवाह अर्थात् आनन्द प्रदान करने वाली, प्रेम-भक्ति द्वारा प्राप्त होने में सुलभ परम कृपामयी श्रीराधिकाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(८)

गौररूपमधुरां मनोहरां
कृष्णकेशकलितां सुखप्रदाम् ।
वेदशास्त्रप्रतिपादितां प्रियां
राधिकां सरससौभगां भजे ॥

(९)

राधाप्रियाष्टकं स्तोत्रं राधाभक्तिप्रदं सदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीकृष्णाष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णमव्ययं नित्यं राधिकादक्षिणे स्थितम् ।
विभुं क्षराक्षरातीतं हरिं सर्वेश्वरं भजे ॥

(२)

व्रजे वृन्दावने कुञ्जे नानाव्रततिशोभिते ।
विहरन्तं श्रिया सार्द्धं भजेऽहं श्रीविहारिणम् ॥

(३)

सुरम्ये यामुने तीरे सखीमण्डलमण्डिते ।
मुरलीवादनासक्तं भजे श्रीमुरलीधरम् ॥

(४)

निकुञ्जे श्रीवने रम्ये पतत्त्रिकुलकूजिते ।
भ्रमरैर्गुञ्जिते कृष्णं भजेऽहं पंकजेक्षणम् ॥

(८)

मधुर मनोहर गौर स्वरूपा तथा श्यामवर्ण केशों से सुशोभित परम सुखदायिनी वेद-शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित प्रियतमा सर्वसौन्दर्यशालिनी श्रीराधिकाजी का भजन स्मरण करते हैं ।

(९)

यह श्रीराधा-प्रियाष्टक स्तोत्र जो कि सदा ही श्रीराधा-भक्ति प्रदान करने वाला है, इसे श्रीनिम्बार्काचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया है ।

*

श्रीकृष्णाष्टक

(१)

श्रीकिशोरी (राधिका) जी के दक्षिण भाग में विराजमान, त्रिगुणातीत, सर्वव्यापक तथा समस्त पापों को हरण करने वाले सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का मैं नित्य भजन करता हूँ ।

(२)

नानाविध लताओं से परिशोभित व्रज वृन्दावन की श्रीनिकुञ्ज में श्रीप्रिया (राधिका) जी के साथ विहरण करने वाले श्रीवृन्दावनविहारी (श्रीकृष्ण) का मैं भजन करता हूँ ।

(३)

परम रमणीय श्रीयमुनाजी के तट पर सखी समूह से परिवेष्टित मुरली-वादन में चतुर भगवान् श्रीमुरलीधर की मैं उपासना करता हूँ ।

(४)

अति सुरम्य श्रीवन (वृन्दावन) की मनोहर कुञ्ज जो विविध पक्षी गणों द्वारा सुकूजित तथा भ्रमर वृन्दों से गुञ्जायमान है वहाँ विराजित कमल दल-लोचन भगवान् श्रीकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ।

(५)

सदानन्तसखीवृन्दैः सेवितं कुञ्जधामनि ।
राधामाधवमाराध्यं भजे सौन्दर्यमन्दिरम् ।।

(६)

मयूरकोकिलाशब्दै - र्गीयमानं निरन्तरम् ।
प्रसन्नं सर्वदा कृष्णं भजे श्रीराधिकाप्रियम् ।।

(७)

अनन्तौदार्यसम्पन्नं सुरवृन्दैः समीडितम् ।
कदम्बकदली-कुञ्जे भजेऽहं कृष्णमच्युतम् ।।

(८)

दिव्यानन्दमहासिन्धुं दीनबन्धुं दयालयम् ।
तं भक्तवत्सलं कृष्णं भजे पूर्णं सनातनम् ।।

(९)

स्तोत्रं कृष्णाष्टकं दिव्यं कृष्णभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

श्रीसर्वेश्वराष्टकम्

(१)

सर्वेश्वरं सदा सेव्यं महर्षिसनकादिकैः ।
आद्यैश्च परमाचार्यैः परमात्मानमाश्रये ।।

(२)

रससिन्धुं महारम्यं कोटिमन्मथमन्मथम् ।
अनन्तासीमसामर्थ्यं वन्दे सर्वेश्वरं हरिम् ।।

(५)

श्रीनिकुञ्ज धाम में अनन्तानन्त सहचरी वृन्दों द्वारा सदा-सर्वदा परिसेवित सुन्दरता के आगर परमाराध्य भगवान् श्रीराधामाधव का मैं सदा ही भजन करता हूँ ।

(६)

मयूर तथा कोयल प्रभृति पक्षी गणों के शब्दों द्वारा निरन्तर परिगीय-मान प्रसन्न वदन श्रीराधिकाप्रिय भगवान् श्रीकृष्ण का मैं सर्वदा भजन करता हूँ।

(७)

महान् उदारता से परिपूर्ण तथा ब्रह्मा और इन्द्रादि देव गणों द्वारा स्तुति किये गये एवं कदम्ब और कदली (केला) के श्रीनिकुञ्ज में विराजित अच्युत भगवान् श्रीकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ।

(८)

परमानन्द के महान् सिन्धु दयासागर दीनबन्धु भक्तवत्सल सनातन पूर्णब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण का मैं भजन करता हूँ ।

(९)

श्रीकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाला यह 'श्रीकृष्णाष्टक' नाम वाला दिव्य स्तोत्र जो कि श्रीनिम्बार्काचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी द्वारा निर्मित है, परिपूर्ण हुआ ।

*

श्रीसर्वेश्वराष्टक

(१)

आद्य परमाचार्य महर्षि श्रीसनकादिकों द्वारा संसेव्य परमात्मा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का मैं सदा ही आश्रय ग्रहण करता हूँ ।

(२)

करोड़ों कामदेवों के मन को भी मन्थन करने वाले रस-सागर परम मनोहर और अनन्त अपार है सामर्थ्य जिनकी, ऐसे पापों को हरण करने वाले हरिरूप भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मैं वन्दना करता हूँ ।

(३)

पूजितं परमं दिव्यं निम्बार्काचार्यदेशिकैः ।
राधाकृष्णाभिधं देवं नौमि सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(४)

वृन्दावनाधिपं कृष्णं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।
राधासर्वेश्वरं देवं प्रभजेऽङ्गसखीवृतम् ॥

(५)

मङ्गलं मङ्गलाधारं सर्वमङ्गलसम्प्रदम् ।
अमङ्गलहरं नौमि परं सर्वेश्वरं प्रभुम् ॥

(६)

मनोज्ञमद्भुतं दिव्यं महामोदप्रदायकम् ।
श्रीनिकुञ्जे स्थितं वन्दे वरं सर्वेश्वरं विभुम् ॥

(७)

सौरीतटे सखीवृन्दै र्विहरन्तं समं व्रजे ।
राधाकृष्णं रसाधारं वन्दे सर्वेश्वरं हरिम् ॥

(८)

सर्वेश्वरं प्रियं देवं रासलीलाप्रियं शुभम् ।
हरिभक्तैः समाराध्यं भजे श्रीराधिकायुतम् ॥

(९)

सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं सर्वेश्वररतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(३)

आचार्यवर श्रीनिम्बार्काचार्य द्वारा संपूजित परम दिव्य भगवान् श्रीराधाकृष्ण रूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु को मैं नमन करता हूँ ।

(४)

श्रीवृन्दावनाधीश्वर सदा सनातन पूर्णब्रह्म श्रीकृष्ण नित्यलीला निकेतन श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु का मैं भजन करता हूँ ।

(५)

मङ्गलस्वरूप, मङ्गलाधार, सर्वदा मङ्गल प्रिय और सब अमङ्गलों के हरण करने वाले परात्पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु को मैं नमन करता हूँ ।

(६)

मधुरातिमधुर अति विलक्षण मनोज्ञ और परमानन्द प्रदान करने वाले दिव्यातिदिव्य स्वरूप तथा श्रीराधिकाजी के अन्तःकरण में विराजमान सर्वव्यापक परमप्रिय श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मैं वन्दना करता हूँ ।

(७)

श्रीयमुनाजी के तट पर सखी समूह के साथ विहरण करने वाले व्रज-विहारी रस-स्वरूप पापहारी राधाकृष्ण श्रीसर्वेश्वर प्रभु की मैं वन्दना करता हूँ ।

(८)

रसिकजनों द्वारा समाराधित रासलीलाविहारी श्रीराधिकाजी के सहित परम प्रिय श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् का मैं भजन करता हूँ ।

(९)

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की भक्ति प्रदान करने वाले श्रीराधासर्वेश्वराष्टक स्तोत्र की जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने रचना की ।

*

श्रीवेणुगीताष्टकम्

(१)

वृन्दावने कुञ्जवने निकुञ्जे
सौरीप्रतीरे रसदानशीलः ।
पीयूषवर्षां सततं प्रकुर्वन्
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(२)

नित्यं हरेः श्रीकरकञ्जयुग्मे
प्रद्योतमानो व्रजकिंकरीभिः ।
उपासनीयः कलनादकारः
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(३)

संगीतवाणीरसमूलमन्त्रः
सर्वेश्वर-श्रीमुखशोभमानः ।
मुनीन्द्र-योगीन्द्रगणैः प्रपूज्यः
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(४)

समस्तवेदागमदिव्यमन्त्रैः
प्रगीयमानः सुखसिन्धुरूपः ।
सप्तस्वरै रागविधानशीलः
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(५)

कन्दर्पदर्पाऽपहरो मनोज्ञो
विशुद्धचित्ताऽतुलभक्तिदाता ।
व्रजांगनादिव्ययशः-प्रगाता
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

श्रीवेणुगीताष्टक

(१)

श्रीधाम वृन्दावन की कुंज निकुंजों में तथा श्रीयमुनाजी के तट पर रस दान परायण और निरन्तर अमृतमयी वर्षा करता हुआ श्रीकृष्ण वेणु मेरे मन को आनन्दित करे ।

(२)

नित्य भगवान् श्रीकृष्ण के युगल कर कमलों में सुशोभित तथा व्रज सुन्दरियों द्वारा उपासनीय क्लीं इस काम बीज का उच्चारण करने वाला श्रीकृष्ण वेणु हमारे मन को आनन्दित करे ।

(३)

संगीतमयी वाणी रस का मूल मन्त्र अर्थात् आधार रूप और श्रीसर्वेश्वर श्रीकृष्ण के मुखारविन्द पर परम शोभायमान तथा मुनीन्द्र और योगीन्द्र वृन्दों द्वारा पूजनीय श्रीकृष्ण वेणु हमारे मन को आनन्दित करे ।

(४)

समस्त वेद-पुराणादि के दिव्य मन्त्रों द्वारा गायन किये जाने वाले सुख सागर रूप तथा (सा रे ग म प ध नि सा) इन सातों स्वरों द्वारा राग के नियम-विधान में प्रवीण श्रीकृष्ण वेणु मन को आनन्दित करे ।

(५)

कामदेव के अभिमान को दूर करने वाला परम मनोज्ञ तथा शुद्ध अन्तःकरण वाले जनों को भक्तिदान करने वाला एवं व्रजाङ्गनाओं के दिव्य यश का गान करने वाला ऐसा श्रीकृष्ण वेणु मन को सदा रसप्लावित करे।

(६)

कदम्ब-जम्बू-कदली-तमालै-
निषेविते चारुकलिन्दजायाः ।
रम्यं निनादं पुलिने प्रकुर्वन्
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(७)

श्रीकृष्णलीलाकमनीयकुञ्जे
लीलाविधानं विदधद्वरेण्यः ।
प्रियाप्रियार्थं ध्वनिना स्वकेन
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(८)

राधाकराब्जेऽप्यमलंकृतो हि
लीलाप्रसंगे हरिहस्तकञ्जात् ।
युग्मार्थमस्मिन्रसयन्रसज्ञ
श्रीकृष्णवेणू रसयेन्मनो मे ॥

(९)

वेणुगीताष्टकं स्तोत्रं युग्मलीलारसप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

कदम्ब, जामुन, केला और तमाल इन वृक्षों द्वारा परिसेवित सुन्दर श्रीयमुनाजी के पुलिन में सुरम्य निनाद करता हुआ श्रीकृष्ण वेणु हमारे मन को आनन्दित करे ।

(७)

श्रीकृष्णचन्द्र की लीलामय श्रीनिकुंज में श्रीप्रिया प्रियतम के लीला विधान रचने में तत्पर परम श्रेष्ठ और अपने लिये निनाद से शीघ्र ही श्रीकृष्ण वेणु हमारे मन को आनन्दित करे ।

(८)

लीला प्रसङ्ग में श्रीहरि के करारविन्दों से श्रीराधिकाजी के हस्त-कमल में अलंकृत हुआ परम शोभायमान प्रिया प्रियतम इन दोनों ही श्रीयुगल के लिये जिसमें रस का सिंचन होता है ऐसा श्रीकृष्ण वेणु हमारे मन को आनन्दित करे ।

(९)

यह श्रीवेणु गीताष्टक स्तोत्र श्रीराधाकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाला है जिसको आचार्य श्री श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया है ।

*

श्रीनिकुञ्जाष्टसखीमहाष्टकम्

(श्रीरङ्गदेवी)

युग्माऽङ्घ्रिचिन्तनरतां प्रियरङ्गदेवीं
दिव्यां सरोजनयनां नवमेघवर्णाम् ।
मन्दस्मितां कनकचामरमादधानां
वृन्दावनाधिपसखीं रसदां भजामि ॥१॥

(श्रीसुदेवी)

राधाप्रियां सहचरीं सरसां सुदेवी-
मम्भोजहारसमलंकृतहस्तपद्माम् ।
श्रीधाम्नि मञ्जुलनिकुञ्जवने व्रजन्तीं
स्वाराध्यभावभरितां सततं भजामि ॥२॥

(श्रीललिता)

दिव्यस्वरूपनिलयां ललितां सुशीलां
ताम्बूलपूरितसुकाञ्चनपात्रहस्ताम् ।
रासेश्वरीमधुरमंजुकृपाकटाक्षै-
र्मुग्धां कलासु निपुणां रसिकां भजामि ॥३॥

(श्रीविशाखा)

लीलाविधानकुशलां सुभगां विशाखां
कृष्णप्रियापदसरोरुहदत्तचित्ताम् ।
श्रीयामुनाम्बुभरितं कलशं वहन्तीं
सर्वेशरासरसकेलिकरीं भजामि ॥४॥

श्रीनिकुञ्जाष्टसखीमहाष्टक

(श्रीरङ्गदेवी)

नूतन मेघ के समान वर्ण है जिनका, कमल के समान नेत्र वाली मधुर मन्दहास्य - युक्त दिव्यस्वरूपा, सुवर्ण की डांडी वाले चँवर को धारण किये हुए तथा प्रिया-प्रियतम के युगल चरणाविन्दों के चिन्तन में तत्पर रस-प्रदात्री श्रीवृन्दावनाधीश्वर की सखी प्रिया श्रीरङ्गदेवीजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥१॥

(श्रीसुदेवी)

श्रीप्रिया-प्रियतम की सेवा हेतु अपने कर-कमलों में कमल पुष्पों का हार लिये हुए, स्वकीय आराध्य के चिन्तन में लगी हुई तथा वृन्दावन धाम के श्रीनिकुञ्ज में विहरण करने वाली श्रीराधाजी की प्रिय सहचरी परम रसीली श्रीसुदेवीजी का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ॥२॥

(श्रीललिता)

पान भोग की सेवा हेतु सुवर्ण की पानदानी में पान-वीडा सजाकर अपने हाथों में लिये हुये और रासेश्वरी श्रीराधिकाजी के कृपा-कटाक्षों द्वारा परम प्रसन्न हुई सब कलाओं में प्रवीण, परमानन्द--स्वरूपधाम परम रसिका सुशील श्रीललिताजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥३॥

(श्रीविशाखा)

कृष्णप्रिया श्रीराधिकाजी के चरणारविन्दों में लगा हुआ है चित्त जिनका, लीलाविधान में परम निपुण, श्रीयमुनाजी के जल की झारी लिये हुए जल-सेवा में संलग्न, श्रीसर्वेश्वर राधामाधव के रास--रस--केलिकला में निपुण भाग्यशालिनी श्रीविशाखाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥४॥

(श्रीचम्पकलता)

आलिञ्च चम्पकलतां विपिने चलन्तीं
　　　　चारुप्रवालमणिमाल्यसुशोभमानाम् ।
दिव्यां चकोरनयनां युगलैकनिष्ठां
　　　　कुञ्जाऽर्चनापटुतरां रुचिरां भजामि ।।५।।

(श्रीचित्रा)

चित्रां विचित्रवसनां नवचारुरूपां
　　　　चित्राऽङ्कनातिचतुरां रसिकाग्रगण्याम् ।
राधाविहारिचरणाम्बुजलब्धहर्षां
　　　　वृन्दावने रसघने सरसां भजामि ।।६।।

(श्रीतुङ्गविद्या)

विद्याविवेकनिलयामथतुङ्गविद्यां
　　　　सेवारतां युगलरासविलासहेतोः ।
सङ्गीतशास्त्रनिपुणां कमनीयकण्ठां
　　　　सौन्दर्यसिन्धुरमणीयमणिं भजामि ।।७।।

(श्रीइन्दुलेखा)

कृष्ण-प्रियार्थमनिशं कुसुमानि पाणौ
　　　　प्रादाय हर्षभरितां वरदेन्दुलेखाम् ।
श्रीमद्धरेः सहचरीप्रवरां रसज्ञां
　　　　कुञ्जेषु केलिनिरतां नितरां भजामि ।।८।।

(६)

अष्टसख्यष्टकं स्तोत्रं युंग्मलीलारसावहम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

(श्रीचम्पकलता)

सुन्दर प्रवाल मणिमाला से परम शोभायमान चकोर के समान नेत्र वाली, दिव्य स्वरूपा, विपिन (श्रीवृन्दावन) में विहरण करने वाली युगल स्वरूप श्रीप्रिया--प्रियतम के श्रीचरणारविन्दों में है निष्ठा जिनकी, ऐसी श्रीनिकुञ्ज मन्दिर सेवा में परम चतुर सहचरी श्रीचम्पकलताजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥५॥

(श्रीचित्रा)

नव-नवायमान सुन्दर स्वरूप विचित्र वेषभूषा को धारण करने वाली तथा चित्र निर्माणादि में परम चतुर, रसिकजनों में अग्रगण्य, श्रीराधाकृष्ण चरणारविन्दों की नित्यसेवा में परम हर्षित, रसघन श्रीवृन्दावन में रसयुक्त श्रीचित्रा सखीजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥६॥

(श्रीतुङ्गविद्या)

सङ्गीत शास्त्र में परम निपुण, कोकिल वैनी अर्थात् सुन्दर मधुर कण्ठ वाली युगल रास-विलास के निमित्त सेवा में संलग्न, सौन्दर्य सिन्धु की सुन्दरतम मणिस्वरूप, विद्या और विवेक की निधि ऐसी श्रीतुङ्गविद्याजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥७॥

(श्रीइन्दुलेखा)

प्रिया--प्रियतम की सेवार्थ प्रतिदिन पुष्प--पात्र हाथों में धारण किये हुए प्रेम भरी श्रीहरि की श्रेष्ठ सहचरी परम रसज्ञा, कुञ्जों में क्रीडा निरत वर-प्रदात्री श्रीइन्दुलेखाजी का हम भजन स्मरण करते हैं ॥८॥

(९)

प्रिया--प्रियतम (श्रीराधाकृष्ण) की लीला--रस प्रदान करने वाले इस अष्ट सख्यष्टक नामक स्तोत्र का आचार्य चरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवा-चार्यजी महाराज ने निर्माण किया ॥

श्रीयमुनाष्टकम्

(१)

श्रीमत्कृष्णाङ्गसम्भूतां महाकल्लोलिनीं प्रियाम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(२)

राधावगाहितां दिव्यां सखीभिः सार्द्धमद्भुतम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(३)

पङ्कजैः चर्चितां चारु स्वर्णघट्टैश्च शोभनाम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(४)

परितः परिखारूपां श्रीमद्वृन्दावनं व्रजे ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(५)

मकरैः कच्छपैर्मत्स्यैः सुरम्यां रसवर्षिणीम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(६)

रसिकैर्भावुकैः सेव्यां युग्मभक्तिप्रदायिनीम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

(७)

पुराणैः श्रुतिभिस्तन्त्रै र्वर्णितां व्रजवाहिनीम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधारासुखप्रदाम् ।।

श्रीयमुनाष्टक

(१)

भगवान् श्रीकृष्ण के श्रीअङ्ग से प्रादुर्भूत महा तरङ्गों से युक्त अति प्रिय दिव्य धारा से प्रवाहित श्रीयमुनाजी का हम प्रतिदिन भजन स्मरण करते हैं ।

(२)

सखी समूह के साथ श्रीराधिकाजी के अद्‌भुत दिव्य अवगाहन (स्नान) से सुशोभित तथा दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं ।

(३)

विविध सुन्दर कमलों से सुशोभित सुवर्णमय घाटों से परम मनोहर (यहाँ पर यमुनाजी के अप्राकृतिक दिव्य स्वरूप से तात्पर्य है, जो कि रसिक-शेखर स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज ने बादशाह अकबर को कुछ क्षण के लिए दिव्य दृष्टि देकर श्रीधाम एवं श्रीयमुनाजी के अनन्त ऐश्वर्य का दर्शन कराया था) ऐसी दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं ।

(४)

व्रज में श्रीवृन्दावन धाम के चारों ओर परिखा अर्थात् वलयाकार रूप में विद्यमान है ऐसी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं ।

(५)

मगर, कछुए और मछलियों से अति रमणीय, रस की वर्षा करने वाली, दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं।

(६)

रसिक और भावुक जनों से परिसेवित तथा श्रीराधाकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाली, दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं ।

(७)

वेद-पुराण और तन्त्र शास्त्रों द्वारा वर्णित, व्रज में वहने वाली, दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन स्मरण करते हैं ।

(८)

कालिन्दीं कमलाऽऽराध्यां युग्मक्रीडार्थमुद्भवाम् ।
भजामि यमुनां नित्यं दिव्यधाराप्रवाहिणीम् ॥

(९)

श्रीयमुनाष्टकं स्तोत्रं युग्मभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीगोवर्धनाष्टकम्

(१)

व्रजे गोवर्धनं दिव्यं गिरिराजं हरिप्रियम् ।
मानसीगङ्गया रम्यं वन्दे संशोभितं द्रुमैः ॥

(२)

हरेः साक्षात्स्वरूपञ्च गोगोपैः समलंकृतम् ।
नानासरोवरैः पूर्णं भजेऽहं व्रजवल्लभम् ॥

(३)

निर्झराणां महानादैर्विहङ्गमकलस्वनैः ।
रमणीयं मृगैर्मुग्धैः संभजामि गिरीश्वरम् ॥

(४)

मर्कटैश्चञ्चलैश्चारु सुरम्यं गह्वरैः प्रियैः ।
रसिकैः साधुभिर्नित्यं नौमि गोवर्धनं मुदा ॥

(५)

व्रजवासिभिराराध्यं व्रजजीवनजीवनम् ।
व्रजालिमञ्जुसङ्गीतै र्गीतं गोवर्धनं भजे ॥

(८)

लक्ष्मी से आराधित कालिन्दी (श्रीयमुनाजी) श्रीराधाकृष्ण की लीला हेतु ही जिनका उद्‌गम हुआ है ऐसी दिव्य धारा प्रवाहिणी श्रीयमुनाजी का हम नित्य भजन करते हैं ।

(६)

यह श्रीयमुनाष्टक स्तोत्र जो कि श्रीराधाकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाला है इसकी आचार्य चरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने रचना की है ।

श्रीगोवर्धनाष्टक

(१)

मानसी गङ्गा एवं द्रुम लताओं से संशोभित परम रमणीय व्रजमण्डलस्थ हरिप्रिय श्रीगिरिराज गोवर्धन की मैं वन्दना करता हूँ ।

(२)

जो साक्षात् भगवान् श्रीहरि का ही स्वरूप है, और गो-गोपों द्वारा समलंकृत है तथा नाना सरोवरों से परिपूर्ण है, ऐसे व्रज प्रिय भगवान् श्रीगोवर्धन का हम भजन करते हैं ।

(३)

निर्झरों (झरनों) द्वारा निनादित, पक्षीगणों के कलरव से परिगुञ्जायमान, मुग्ध अर्थात् भोले-सरल या प्रसन्नमन मनोहारी मृगों से परम रमणीय ऐसे श्रीगिरिराज (गोवर्धन) का मैं सम्यक् प्रकार से भजन करता हूँ ।

(४)

क्रीडारत चञ्चल बन्दरों से परम रमणीय, सुन्दर गुफाओं एवं रसिक सन्तजनों द्वारा परिशोभित श्रीगिरिराज को मैं प्रसन्नता पूर्वक नमन करता हूँ ।

(५)

व्रज-ललनाओं द्वारा मधुर मनोहर सङ्गीत से गीयमान और व्रजवासियों के आराध्य, व्रजजीवनधन श्रीगोवर्धन का मैं भजन (सेवन) करता हूँ ।

(६)

सप्तक्रोशसुविस्तीर्णं श्रीकृष्णकररञ्जितम् ।
कल्पद्रुमं कृपापूर्णं गिरिराजं सदा भजे ॥

(७)

प्रपन्नाऽर्तिहरं देवं राधासर्वेश्वरस्थलम् ।
महानन्दसुधासिन्धुं वन्दे गिरिवरं सदा ॥

(८)

गोविन्दललिताराधाकृष्णकुण्डैः सुशोभितम् ।
निम्बग्रामसमीपस्थं गिरिराजं हृदाऽऽश्रये ॥

(९)

गोवर्धनाष्टकं स्तोत्रं राधाकृष्णाऽङ्घ्रिभक्तिदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीमानसीगंगाष्टकम्

(१)

व्रजे गोवर्द्धने रम्ये सर्वशैलाधिपेश्वरे ।
नमामि मानसीगंगां श्रीकृष्णमानसोद्भवाम् ॥

(२)

कूर्मैः सुशोभितां दिव्यां मत्स्यैर्जलचरैरहो ।
नमामि मानसीगंगां पंकजैरमितप्रियाम् ॥

(६)

सात कोश के विस्तार में फैले हुये और भगवान् श्रीकृष्ण के कर-कमल द्वारा धारण करने से परम सुशोभित भक्तजनों की मनोभिलषित कामनाओं को पूर्ण करने वाले श्रीगिरिराज का हम सदा ही भजन (सेवन) करते हैं ।

(७)

शरणागत जनों के कष्ट को हरण (दूर) करने वाले, श्रीराधासर्वेश्वर भगवान् के दिव्य स्थल और अपार आनन्दरूप अमृत के सागर ऐसे श्रीगिरिराजदेव की हम सदा वन्दना करते हैं ।

(८)

गोविन्दकुण्ड, श्रीकृष्णकुण्ड, ललिताकुण्ड और राधाकुण्ड से परम सुशोभित तथा श्रीनिम्बग्राम के समीप स्थित ऐसे श्रीगिरिराज का मैं हृदय से आश्रय ग्रहण करता हूँ ।

(६)

भगवान् श्रीराधागोविन्द की भक्ति प्रदान करने वाला यह श्रीगोवर्धनाष्टक स्तोत्र आचार्य प्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा निर्मित है ।

*

श्रीमानसीगंगाष्टक

(१)

व्रज एवं जगत् के सम्पूर्ण पर्वतों के राजा परम रमणीय श्रीगिरिराज गोवर्धन में भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के मानस से उत्पन्न हुई श्रीमानसीगङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(२)

कच्छप (कछुवा) तथा मत्स्य (मछली) आदि जलचरों द्वारा परम शोभायमान और विकसित कमलों द्वारा परम प्रिय लगने वाली ऐसी श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(३)

आवृतां तरुभी रम्यैः कूजितां कीर-कोकिलैः ।
नमामि मानसीगङ्गां मधुपैरभिगुञ्जिताम् ।।

(४)

ब्रह्मविद्वेदघोषैश्च रुचिरां सद्भिरश्चिताम् ।
नमामि मानसीगङ्गां सेवितां रसिकोत्तमैः ।।

(५)

राधाकृष्णप्रियां पूज्यां पराभक्तिप्रदायिनीम् ।
नमामि मानसीगङ्गां पुराणैः प्रतिपादिताम् ।।

(६)

वेदार्थज्ञानसम्पन्नै र्विप्रैश्च समुपासिताम् ।
नमामि मानसीगङ्गां सर्वगङ्गाधिपेश्वरीम् ।।

(७)

श्रीकरीं श्रीधरां श्रीशां श्रीप्रियां श्रीसुखावहाम् ।
नमामि मानसीगङ्गां श्रीप्रदां श्रीवरप्रदाम् ।।

(८)

महाद्भुतपयोधारा-वहां श्यामस्वरूपिणीम् ।
नमामि मानसीगङ्गां व्रजभक्तैः सदाऽर्चिताम् ।।

(९)

स्वेष्टदं मानसीगङ्गा-स्तोत्रं यद्वाञ्छितप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणांन्तेन निर्मितम् ।।

*

(३)

जिसके चारों ओर सुन्दर वृक्षावली हैं, जिन पर तोता और कोयल आदि पक्षीगण कलरव कर रहे हैं तथा भ्रमरगणों के निनाद से गुञ्जायमान है, ऐसी श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(४)

ब्रह्म वेत्ता विद्वानों द्वारा वेद-मन्त्रों से उद्घोषित तथा परम सुन्दर एवं सुत्पुरुषों द्वारा परिपूजित और रसिकजनों द्वारा सेवित ऐसी श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(५)

श्रीराधाकृष्ण की परम प्रिय पूज्य स्वरूपा पराभक्ति प्रदान करने वाली तथा पुराणों द्वारा प्रतिपादित ऐसी श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(६)

वेदार्थ-ज्ञान-सम्पन्न विद्वान् ब्राह्मणों द्वारा समुपासित और समस्त गङ्गाओं में सर्वश्रेष्ठ श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(७)

लक्ष्मी प्रदान करने वाली, शोभा धारण करने वाली, श्रीलक्ष्मीजी से श्रेष्ठ श्रीराधिकाजी की प्रिय तथा श्रीराधिकाजी को सुख पहुँचाने वाली सर्व सम्पदाओं में श्रेष्ठ आध्यात्मविद्या प्रदान करने वाली, निखिल सम्बृद्धि की प्राप्ति का वरदान देने वाली श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(८)

समय-समय पर परम अद्भुत दुग्धधारा वहाने वाली श्यामस्वरूपा व्रजभक्तों द्वारा सदा संपूजित ऐसी श्रीमानसी गङ्गा को हम नमस्कार करते हैं ।

(९)

इच्छित वरदान देने वाले इस श्रीमानसी गङ्गा स्तोत्र की, जो कि समस्त कामनाओं की पूर्ति करने वाला है इसका आचार्य चरण श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

*

श्रीराधाकुण्डाष्टकम्

(१)

व्रजे देवाराध्ये गिरिपतिवने सुन्दरतरं
महादिव्यं भव्यं कनकजटितं घट्टसुभगम् ।
अहो सद्भिः सेव्यं युगलरसिकै र्भक्तिविभवै-
र्भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(२)

महद्भिश्चाऽऽराध्यं जटिलजटया शोभिततमै-
स्तपोनिष्ठैः शुद्धै र्विमलहृदयैर्ध्याननिरतैः ।
सदा श्रीश्रीराधापदमधुकरै र्भक्तरसिकै-
र्भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(३)

पुराणैः श्रीसद्भि र्मधुरमधुरं गीतमनिशं
समग्रैः सद्ग्रन्थै र्निगमगदितं कृष्णपरकैः ।
रसाऽऽसिक्तैर्भक्तैरथ मणिमयं सम्प्रकथितं
भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(४)

अचिन्त्यं गीर्वाणैः परममनिशं मञ्जुलतमं
वरेण्यैः शास्त्रज्ञैर्मुखनिगदितं कान्तिभरितम् ।
महारम्यं प्रेष्ठं मधु-रसयुतं भीतिहरणं
भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(५)

झषैः कूर्मै र्भेकै र्जलचरवरैश्चित्तहरणम्
प्रफुल्लैरम्भोजैरमितरमणं निर्मलजलम् ।
कपिव्रातक्रीडानवविविधरूपप्रियकरं
भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

श्रीराधाकुण्डाष्टक

(१)

व्रज मण्डल में देवताओं द्वारा आराधित, श्रीगिरिराज (गोवर्धन) की तरेटी में सुन्दरतम महादिव्य परम विशाल सुवर्ण जटित घाटों से शोभायमान और सत्पुरुषों तथा प्रिया-प्रियतम श्रीश्यामा-श्याम युगल किशोर के रसिक भक्त जनों द्वारा परिसेवित, श्रीराधिकाजी को आनन्द प्रदान करने वाले सरस मधुरमय श्रीराधाकुण्ड का हम भजन-स्मरण करते हैं ।

(२)

जटिल अर्थात् अतिशय घनीभूत जटाओं से परम सुशोभित, निर्मल-हृदय ध्याननिरत शुद्धचित्त तपोनिष्ठ, श्रीराधिकाजी के चरणारविन्दों के मधुकर, रसिकजन महापुरुषों द्वारा आराध्य, सर्वसुखप्रद सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का भजन स्मरण करते हैं ।

(३)

पुराण और तन्त्र शास्त्रों द्वारा अहर्निश मधुर-मधुर शब्दों द्वारा गायन किये जाने वाले तथा कृष्णपरक समग्र शास्त्रों द्वारा वर्णित और वेद प्रतिपादित रसिक जनों द्वारा संकथित, मणिमय सर्वसुखप्रद सरस, मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(४)

सुरवृन्दों द्वारा जिसकी महिमा प्रस्तुति अचिन्त्य है, सर्वशास्त्रनिष्णात विद्वज्जनों के मुख से जो प्रतिपादित है, अपनी दिव्य छटा से परिपूर्ण परम-मनोहर, अति रमणीय महान् मधुर रस से युक्त, समस्त भय को दूर करने वाले, अतिश्रेष्ठ सुखप्रद सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(५)

मत्स्य-कच्छप मण्डूक आदि उत्तम जलचरों से परम चित्ताकर्षक तथा प्रफुल्लित कमलों द्वारा बढ़ रही है शोभा जिसकी निर्मल जलयुक्त एवं बन्दरों की विविध क्रीडाओं से परम मनोहर ऐसे सुखकर सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(६)

कुरंगै र्गोवृन्दै र्ललितललितं पूर्णममलं
द्विजस्वाहाकारैः परमरुचिरं साधुसुभगम् ।
सुधीवेदाभ्यासैरतिरुचिकरं शास्त्रकथितं
भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(७)

विहंगानां नानाविधकलरवैः शोभनतमं
द्विरेफानां पुञ्जैः परिलसितगुञ्जैः प्रियकरम्।
सदा सद्भिर्गेयं कलिमलहरं कीर्तनरतै-
र्भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(८)

व्रजालीनां गीतैः प्रचुरभरितं नृत्यलसितं
व्रजस्थैः सद्गोपै र्जयनिगदितं रासरसितम्।
अथ श्रीकृष्णश्रीकरकमलवंशीरवभरं
भजे राधाकुण्डं सरसमधुरं श्रीसुखकरम् ॥

(९)

राधाकुण्डाष्टकं स्तोत्रं राधाभक्तिकरं सदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

मृग-यूथ और गायों के झुंड से सुललित परम शोभायमान, अति निर्मल, ब्राह्मणों के द्वारा स्वाहाकार शब्दों से परम सुभग, विद्वान् पुरुषों के वेदोच्चारण से अति मनोरम, शास्त्र-संकथित, सुखकर सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(७)

पक्षियों के नानाविध सुन्दर कलरव से परम सुशोभित, भ्रमरों के झुण्ड से चारों ओर गुञ्जायमान, सदा ही श्रीभगवन्नाम संकीर्तन-परायण वैष्णव-सन्तों द्वारा परिगीयमान, कलिकल्मषहारी, सुखप्रद सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(८)

व्रजवनिताओं द्वारा सुन्दर मधुर गान से परिपूर्ण, तथा उनके दर्शनीय नृत्य से सुललित, व्रज के श्रेष्ठ गोपगणों द्वारा जय जय घोष से सुशोभित, युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के ललित रास विलास रस से उल्लसित, भगवान् श्रीकृष्ण के करकमलस्थवंशी से निनादित, परम सुखप्रद सरस मधुर श्रीराधाकुण्ड का हम भजन सेवन करते हैं ।

(९)

यह श्रीराधाकुण्डाष्टक स्तोत्र जो कि सदा--सर्वदा श्रीराधाभक्ति प्रदान करने वाला है इसकी आचार्यप्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने रचना की ।

*

श्रीकृष्णकुण्डाष्टकम्

(१)

श्रीमद्व्रजे कृष्णमनोज्ञधाम्नि
गोवर्धने धेनुकदम्बरम्ये ।
दिव्यप्रभाव्यूहविराजमानं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(२)

मुनीश्वरै र्धीरजनैरुपास्यं
व्रजेश्वरीनित्यसखीसमीड्यम् ।
उपासकै र्भक्तिभरैः समर्च्यं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(३)

यत्सन्ततं साधुवरैः सतृष्णं
संस्तूयमानं सरसैः स्तवैश्च ।
तन्माधवस्याऽङ्गसखीजनेष्टं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(४)

नानालतागुल्मनिषेव्यमानं
नीलाम्बुजैश्चारुसुधास्वरूपम् ।
लोकोत्तरं रासविलासकेन्द्रं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(५)

यत्राऽच्युतः श्रीगिरिधारिरूपो
राधासमेतं विहरन् प्रसन्नः ।
अप्राकृतं तच्च रसप्रवाहं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

श्रीकृष्णकुण्डाष्टक

(१)

भगवान् श्रीकृष्ण के मनोरम धाम श्रीव्रजमण्डल में गो-समूह (गायों के झुण्ड) से परम रमणीय, गिरिराज श्रीगोवर्धन में अपनी दिव्य शोभा से परिक्रमा में विराजमान श्रीकृष्ण-कुण्ड की हम सम्यक् प्रकार से उपासना करते हैं ।

(२)

धीर पुरुष मुनीश्वरों के परमोपास्य, व्रजेश्वरी श्रीकिशोरीजी की नित्य सहचरियों द्वारा पूजनीय, भक्ति से परिपूर्ण उपासकों द्वारा समर्चित श्रीकृष्ण कुण्ड की हम उपासना करते हैं ।

(३)

जो निरन्तर श्रेष्ठ साधुजनों द्वारा सतृष्ण अर्थात् पिपासा पूर्वक रसमय स्तोत्रों द्वारा संस्तूयमान हैं, भगवान् श्रीकृष्ण की अङ्गजा सखीजनों के प्रिय श्रीकृष्ण कुण्ड की हम सम्यक्तया उपासना करते हैं ।

(४)

नाना प्रकार के लता-द्रुमों से परिशोभित और सुन्दर नील कमलों से अति रमणीय, अमृत स्वरूप श्रीरासविलास का मनोरम स्थल, लोकोत्तर श्रीकृष्ण कुण्ड की हम उपासना करते हैं ।

(५)

जहाँ अच्युत भगवान् श्रीकृष्ण गिरिधारी के रूप में श्रीराधिकाजी के साथ नित्यविहार करते हैं, उस रस प्रवाहित अप्राकृत (लोकोत्तर) श्रीकृष्ण कुण्ड की हम सम्यक्तया उपासना करते हैं ।

(६)

वंशीधरः श्रीभगवान्मुकुन्दो
वंशीनिनादं विदधाति यत्र ।
एवं वरिष्ठं वरणीयमाशु
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(७)

गभीरपानीयमनन्तरूपं
सदा विशुद्धं भवभीतिचौरम् ।
श्रीमत्तुलस्याः सुरभिप्रपूर्णं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(८)

सरोजपुञ्जै र्जलजन्तुकेल्या
मनोरमं शान्तिसुखावहं नः ।
राधापदाम्भोजसुगन्धतृप्तं
श्रीकृष्णकुण्डं समुपाश्रयामि ॥

(९)

कृष्णकुण्डाष्टकं स्तोत्रं कृष्णभक्तिकरं प्रियम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीललिताकुण्डाष्टकम्

(१)

गोवर्धने व्रजे रम्ये राधाकुण्डे मनोरमम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ॥

(२)

श्रीमन्निम्बार्कशिष्यश्री-निवासाचार्यसेवितम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ॥

(६)

जहाँ वंशी को धारण करके भगवान् मुकुन्द वंशी का निनाद करते हैं ऐसे सुन्दर रमणीय शीघ्र वरण अर्थात् प्राप्त करने योग्य श्रीकृष्ण कुण्ड की हम भली प्रकार से उपासना (आराधना) करते हैं ।

(७)

अगाध जल से परिपूर्ण, अनन्त स्वरूप सर्वदा विशुद्ध भव-भीति चौर अर्थाद् भव-रोग को हरण करने वाले तथा श्रीतुलसी के सुन्दर द्रुम-वृन्दों की सुगन्ध से परिपूर्ण हुए श्रीकृष्ण कुण्ड की हम सभी प्रकार से उपासना करते हैं ।

(८)

कमल-समूह से तथा जल जन्तुओं की सुन्दरतम क्रीडाओं से मनोरम और सुख-शान्ति प्रदान करने में प्रसिद्ध, श्रीराधिकाजी के चरणारविन्दों की सौरभ से परम तृप्त श्रीकृष्ण-कुण्ड की हम भली प्रकार से उपासना करते हैं ।

(९)

यह श्रीकृष्ण कुण्डाष्टक स्तोत्र श्रीकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाला है इसे आचार्यप्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

श्रीललिताकुण्डाष्टक

(१)

व्रजमण्डलस्थ श्रीगोवर्धन परिक्रमा में परम रमणीय मनोहर, श्रीराधा कुण्ड के समीप पूर्वाचार्यों द्वारा परिसेवित श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(२)

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र के प्रमुख शिष्य शंखावतार भाष्यकार श्री श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की जहाँ तपस्थली (बैठक) है, जहाँ से श्रीराधामाधव प्रभु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पधारे थे । ऐसे पूर्वाचार्यों से परिसेवित श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(३)

प्रतिपाद्यं पुराणेषु सुप्रसिद्धं व्रजावनौ ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यैर्निषेवितम् ।।

(४)

राधाकृष्णस्य क्रीडाया रम्यं क्षेत्रं सुखावहम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ।।

(५)

श्रीललितासखीसेव्यं नानाविधकलाऽङ्कितम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ।।

(६)

नित्यलीलारसाधारं नित्यलीलासुखस्थलम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ।।

(७)

राधामाधवयुग्मस्य नित्यविहारमन्दिरम् ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ।।

(८)

विपुलै रसिकैः सेव्यं रासदर्शनलिप्सुभिः ।
प्रपद्ये ललिताकुण्डं पूर्वाचार्यै र्निषेवितम् ।।

(९)

ललितं ललिताकुण्डाष्टकं स्तोत्रं रसप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(३)

श्रीव्रज-वसुन्धरा पर सुप्रसिद्ध पुराणादि शास्त्रों में वर्णित पूर्वाचार्यों द्वारा परिसेव्यमान श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(४)

श्रीराधा-कृष्ण की लीलाओं से सुख प्रदान करने वाले, रमणीय क्षेत्र, पूर्वाचार्यों से परिसेवित श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(५)

श्रीललिता सखी द्वारा परिसेव्यमान, विविध कला कौशलादि से निर्मित, पूर्वाचार्यों द्वारा परिसेवित श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(६)

नित्य-लीला रस के आधार भूत और नित्य लीला के परमसुखदायक स्थल श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(७)

युगल किशोर श्रीराधामाधव की विहार स्थली, पूर्वाचार्यों से परि-सेवित श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(८)

श्रीरासदर्शनाभिलाषी असंख्य रसिकजनों द्वारा परिसेवित, पूर्वाचार्यों द्वारा परिसेव्यमान श्रीललिता कुण्ड की हम शरण ग्रहण करते हैं ।

(९)

रस प्रदान करने वाले परमललित श्रीललिताकुण्डाष्टक स्तोत्र का आचार्यप्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

*

श्रीनिम्बग्रामाष्टकम्

(१)

गोवर्द्धने व्रजे धाम्नि श्रीनिम्बार्कतपः स्थले ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(२)

मृगैः शाखामृगै रम्ये धेनुवृन्दैश्च मञ्जुले ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(३)

दीक्षितो यत्र निम्बार्कस्तत्र श्रीनारदेन वै ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(४)

श्रीसुदर्शनकुण्डेन मण्डिते दिव्यपावने ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(५)

कदम्बाऽऽम्रशमीनिम्बैः पादपैः परिशोभिते ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(६)

मयूरैः कोकिलैः कीरैः खगवृन्दैः प्रकूजिते ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(७)

श्रीजगद्गुरुणा यत्राऽञ्चितः सर्वेश्वरः प्रभुः ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

(८)

श्रीसुदर्शनचक्रस्याऽवतारो यत्र शोभते ।
निम्बग्रामे दर्शनीये निवासं नित्यमाश्रये ।।

श्रीनिम्बग्रामाष्टक

(१)

व्रजमण्डलस्थ श्रीगोवर्धन धाम में श्रीनिम्बार्क भगवान् की तपोभूमि रूप उस दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की इच्छा करते हैं।

(२)

परम सुरम्य, हरिण और बन्दरों तथा गायों के समूह द्वारा परिशोभित अति दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की अभिलाषा करते हैं।

(३)

जहाँ पर देवर्षि नारदजी द्वारा श्रीनिम्बार्क भगवान् को दीक्षा हुई उस परम सुरम्य दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की आकांक्षा रखते हैं ।

(४)

श्रीसुदर्शन कुण्ड से परम सुशोभित पावन स्थल दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की आशा करते हैं ।

(५)

कदम्ब, आम, शमी और निम्ब आदि वृक्षों से शोभायमान अत्यन्त दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की लालसा रखते हैं ।

(६)

मयूर, कोयल, तोता आदि पक्षीगणों की मधुर ध्वनि से गुञ्जायमान परम दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की अभिलाषा करते हैं ।

(७)

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा जहाँ श्रीसर्वेश्वर भगवान् की सेवा-पूजा हुई है, ऐसे अतिशय दर्शनीय श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की आकांक्षा रखते हैं ।

(८)

श्रीसुदर्शन चक्रावतार श्रीनिम्बार्क भगवान् का श्रीविग्रह जहाँ विराजमान है, ऐसे दर्शनीय हृदयाकर्षक श्रीनिम्बग्राम में हम निरन्तर निवास करने की इच्छा करते हैं ।

(६)

निम्बग्रामाष्टकं स्तोत्रं युग्मभक्तिरसप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीमद्भगवद्गीताष्टकम्

(१)

श्रीकृष्णश्रीमुखोद्गीतां दिव्यानन्दसुधाप्रदाम्।
अनन्ताध्यात्मसत्कोषां गीतां भागवतीं भजे ।।

(२)

पराभक्तिप्रदां गीतां तत्त्वत्रयविवेकदाम् ।
श्रीमत्कृष्णात्मिकां हृद्यां वन्दे नित्यं कृपावहाम्।।

(३)

प्रपन्नाऽभयदां गीतां महामङ्गलकारिणीम् ।
हरेः प्रत्यक्षवाग्रूपां नौमि कल्पलतां प्रियाम् ।।

(४)

श्रीमहाभारते ग्रन्थे व्यासेन वर्णितामिह ।
भक्तिज्ञानभरां गीतां कर्मयोगप्रदां भजे ।।

(६)

यह श्रीनिम्बग्रामाष्टक नामक स्तोत्र जो कि भगवान् श्रीराधाकृष्ण की भक्ति प्रदान करने वाला है, इसे आचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

*

श्रीमद्‌भगवद्‌गीताष्टक

(१)

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, आनन्दकन्दनन्दनन्दन, सर्वेश्वर, भगवान् श्रीकृष्ण के दिव्य श्रीमुखारविन्द से प्रकट, परमदिव्य आनन्दरसामृत को प्रदान करने वाली, असीम महिमा सम्पन्न-अध्यात्म-विद्या की अद्‌भुत निधि अथवा अनन्त अर्थात् श्रीसर्वेश्वर के अध्यात्म-स्वरूप को बताने वाली महानिधिरूप श्रीमद्भगवद्‌गीता उसका हम भजन अर्थात् निरन्तर अनुशीलन करते हैं ।

(२)

पराभक्ति प्रदान करने वाली, तत्त्वत्रय अर्थात् चित्-अचित्-ईश्वर की सम्यक् ज्ञान प्रदायिका, सर्वदा प्राणियों पर कृपा करने में तत्पर हृदय में धारणीय श्रीकृष्णस्वरूप श्रीमद्भगवद्‌गीता की हम वन्दना करते हैं ।

(३)

परम मङ्गल स्वरूप, शरणापन्न (शरणागत) जनों को अभय देने वाली, भगवान् श्रीकृष्ण की प्रत्यक्ष वाङ्मयरूप कल्पलता अर्थात् वाञ्छित फल को देने वाली अतिश्रेष्ठ श्रीमद्भगवद्‌गीता को नमन करते हैं ।

(४)

इस जगत् में भक्ति और ज्ञान की महासिन्धु रूप, कर्मयोग का बोध कराने में तत्पर, श्रीमहाभारत-ग्रन्थ में भगवान् श्रीवेदव्यास ने जिसका वर्णन किया है, ऐसी कल्याणकारिणी श्रीमद्भगवद्‌गीता का हम भजन अर्थात् अपने अन्तःकरण में अनुशीलन करते हैं ।

(५)

निगमार्थमहासारां ज्ञानविज्ञानसागराम् ।
वासुदेवकृपावृष्टि-धारां गीतां पिबाम्यहम् ॥

(६)

धनञ्जयं समुद्दिश्योपदिष्टां हरिणा स्वयम् ।
गीतामच्युतवाणीं नः श्रेयोदामनिशं भजे ॥

(७)

परमात्ममहाविद्या-स्वरूपज्ञान-सम्प्रदाम् ।
उत्तमां भगवद्गीतां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

(८)

शरणापन्नजीवानां हितार्थं जगतीतले ।
आविर्भूतां सुधारूपां गीतां सततमाश्रये ॥

(९)

श्रीमद्गीताष्टकं स्तोत्रं श्रीकृष्णभक्तिदं प्रियम् ॥
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(५)

समस्त उपनिषदों की सारभूत, अनन्त ज्ञान-विज्ञान की महासिन्धुरूप, भगवान् श्रीकृष्ण की परम कृपावृष्टि की रसमयी धारा रूप श्रीमद्भगवद्गीता का पान अर्थात् अपने हृदयकोष में प्रतिष्ठित करते हैं ।

(६)

अर्जुन को निमित्त बनाकर स्वयं सर्वेश्वर श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्ण ने जगत्कल्याण के निमित्त श्रीगीता का उपदेश किया, हम सभी प्राणियों का निरन्तर कल्याण करने वाली, श्रीहरि की इस दिव्य-वाणी का अनवरत भजन-चिन्तन करते हैं ।

(७)

परमात्म महाविद्या अर्थात् श्रीभगवत्स्वरूप का सुन्दर बोध कराने वाली, परमश्रेष्ठ श्रीमद्भगवद्गीता को मनसा, वाचा, कर्मणा से निरन्तर प्रणाम करते हैं ।

(८)

इस धराधाम पर शरणागत जीवों पर कल्याण करने के लिये ही जिसका प्राकट्य हुआ है, ऐसी अमृतमयी श्रीमद्भगवद्गीता का हम प्रतिक्षण अवलम्ब लेते हैं ।

(९)

श्रीकृष्णभक्तिप्रदाता अतिशय प्रिय श्रीमद्भगवद्गीताष्टक स्तोत्र, जिसकी रचना श्रीआचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने की है ।

*

श्रीमद्भागवताष्टकम्

(१)

भानुवद्भाति भूलोके गङ्गाधिकसुनिर्मलम् ।
वसुदेवात्मजाऽऽख्यानं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(२)

भारतीभाषयाऽऽबद्धं गणेशादिसुरार्चितम् ।
वरेण्यं सर्वशास्त्रेषु तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(३)

भासमानं पुराणेषु गव्याऽधिकसुपावनम् ।
वरप्रदं सुधारूपं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(४)

भाग्योदयकरं दिव्यं गरुड़ध्वजजीवनम् ।
वरिष्ठं व्याससम्भूतं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(५)

भायुक्तं शुकवाग्रूपं गरिष्ठं श्रीरसालयम् ।
वनमालिसुधावृत्तं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(६)

भागवतैः सदा गीतं गन्धर्वै - र्मुखगर्जितम् ।
वन्दारुवृन्दसर्वस्वं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

(७)

भावुकैरनिशं पीतं गतिदानपरायणम् ।
वंशीनादसमायुक्तं तत्त्वं भागवतं स्मृतम् ॥

श्रीमद्भागवताष्टक

(१)

जो सूर्य के समान भूलोक में प्रकाशित है और श्रीगङ्गाजी से भी अधिकतम निर्मल है तथा श्रीवसुदेवनन्दन श्रीकृष्णचन्द्र के आख्यान से समलंकृत है, ऐसे तत्त्व (पदार्थ) को श्रीमद्भागवत कहते हैं ।

(२)

संस्कृत वाङ्मय में जिसकी रचना है, और गणेशादि देवगणों द्वारा पूजित है तथा सभी शास्त्रों में जो श्रेष्ठ है और जो सर्वदा ग्राह्य है ऐसा तत्त्व (पदार्थ) श्रीमद्भागवत के नाम से कहा जाता है ।

(३)

पुराणों में जो प्रकाशमान अर्थात् प्रसिद्ध है और पञ्चगव्यादिक से भी अधिक परम पावन है तथा वरप्रदाता एवं अमृत स्वरूप है उस तत्त्व (पदार्थ) को भागवत के नाम से कहा जाता है ।

(४)

भाग्य का उदय करने वाला इसी से इसको (कल्पवृक्ष) इच्छित वस्तु प्रदान करने वाला कहा जाता है) दिव्य स्वरूप और गरुड़ध्वज भगवान् श्रीहरि को अतिप्रिय है तथा जो अति श्रेष्ठ है, भगवान् श्रीवेदव्यासजी द्वारा रचित है, ऐसे तत्त्व (पदार्थ) को भागवत के नाम से कहते हैं ।

(५)

दिव्य तेज से संयुक्त श्रीशुकदेवजी की वाणी स्वरूप और महत्वपूर्ण रस की निधि है तथा वनमाली (भगवान् श्रीकृष्ण) की अमृतमयी लीला स्वरूप ऐसे तत्त्व (पदार्थ) को भागवत के नाम से कहते हैं ।

(६)

वैष्णवों द्वारा सदा ही गान किये जाने वाले और गन्धर्व गणों के मुख से गर्जित अर्थात् प्रशंसित तथा देवगणों के सर्वस्व, ऐसे तत्त्व (पदार्थ) को भागवत के नाम से कहा गया है ।

(७)

भावुकजनों द्वारा निरन्तर पान किये जाने वाले और मोक्ष प्रदान करने वाले तथा वंशी के सुमधुर ध्वनि से युक्त ऐसे परम तत्त्व (पदार्थ) को भागवत कहा जाता हैं ।

(८)

भावाढ्यं राधिकारूपं गवां मङ्गलमन्दिरम् ।
वशीकरणमन्त्रार्थ-तत्त्वं भावगतं स्मृतम् ।।

(९)

श्रीयुग्मराधिकाकृष्ण - पदाम्भोजरतिप्रदम् ।
सद्वाञ्छापूरकं चाऽस्ति हरिमाहात्म्यसंयुतम् ।।

(१०)

सरलं सरसं हृद्यं श्रीमद्भागवताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीसुदर्शनाष्टकम्

(१)

श्रीमत्कृष्णकराम्भोजे सर्वदा शोभितं प्रियम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ।।

(२)

अनन्तशक्तिसम्पन्नं महादिव्यप्रभायुतम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ।।

(३)

निर्जरैरर्चितं देवं भानुकोटिसमप्रभम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ।।

(८)

दिव्यभाव से परिपूर्ण श्रीराधिकारूप और गायों का परम मङ्गल स्वरूप जिसमें वर्णित है तथा वशीकरण तन्त्रों का अर्थरूप ऐसे परम तत्त्व (पदार्थ) को भागवत के नाम से कहा जाता है ।

(९)

युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण के चरणारविन्दों में प्रेम बढाने वाले परम श्रेष्ठ कामनाओं की पूर्ति करने वाले और श्रीहरि के महात्म्य से युक्त श्रीमद्भागवत है ।

(१०)

इस सरल, सरस और परमप्रिय यह श्रीमद्भागवताष्टक जिसकी आचार्य चरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने रचना की है ।

विशेष-इस अष्टक की अनुष्टुप् छन्दों में रचना हुई है, प्रत्येक श्लोक के चारों चरणों में प्रथमाक्षर में 'भा' द्वितीय में 'ग' तृतीय में 'व' और चतुर्थ में 'त' का प्रयोग किया गया है, जिससे भागवत शब्द सार्थक हो जाता है, यही इस अष्टक की विशेषता है ।

*

श्रीसुदर्शनाष्टक

(१)

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के कर-कमल में सदा-सर्वदा सुशोभित परम प्रिय चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(२)

महादिव्य कान्ति वाले अनन्त शक्ति सम्पन्न चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(३)

देवगणों द्वारा संपूजित तथा करोड़ों सूर्यों के समान कान्ति वाले चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(४)

आधि-व्याधिमहाताप-क्लेशघ्नं बलशालिनम्।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ॥

(५)

दीप्यमानं महाकान्त्याः शान्तिरूपं शुभप्रदम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ॥

(६)

भूत-प्रेताऽसुरादीनां संहर्तारं विना श्रमम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ॥

(७)

सुभक्ताभीष्टदं दिव्यं सर्वसंकटशामकम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ॥

(८)

श्रीकृष्णाज्ञासु सन्नद्धं हरिभक्तार्थतत्परम् ।
नमामि श्रद्धया नित्यं चक्रराजं सुदर्शनम् ॥

(९)

भक्तिदं प्रेतरोगघ्नं सुदर्शनमहाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(४)

मानसिक तथा शारीरिक महाताप और क्लेशों को हरण करने वाले महा वलशाली चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धा पूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(५)

महाकान्ति से दीप्यमान शुभप्रद शान्तिस्वरूप चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धा पूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(६)

बिना ही श्रम किये अर्थात् सहज ही में भूत, प्रेत तथा राक्षसादिकों का संहार करने वाले चक्रराज श्रीसुदर्शन का हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(७)

परम भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले दिव्य-स्वरूप तथा समस्त सङ्कटों का शमन करने वाले चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(८)

श्रीकृष्ण की आज्ञा पालन में सदा कटिबद्ध तथा भक्तों की रक्षा हेतु सदा तत्पर रहने वाले चक्रराज श्रीसुदर्शन को हम श्रद्धापूर्वक नित्य नमस्कार करते हैं ।

(९)

भक्ति प्रदान करने वाले तथा प्रेत रोगों को दूर करने वाले श्रीसुदर्शन महाष्टक नामक स्तोत्र को आचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

*

श्रीपाञ्चजन्याष्टकम्

(१)

अनन्तशक्तिसम्पन्नं श्रीकृष्णकररञ्जितम् ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(२)

गम्भीरघोषमात्रेण सर्वत्रविजयप्रदम् ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(३)

अज्ञानध्वान्तहर्तारं शास्त्रज्ञानप्रदायकम् ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(४)

दक्षिणावर्तिनं शुभ्रं श्रीगोविन्दे मतिप्रदम् ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(५)

शरणापन्नलोकानां हिताय सततं रतम्
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(६)

दिव्यध्वनिकरं रुच्यं संस्तुतं सकलैः सुरैः ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(७)

यन्नामजयमात्रेण जायन्ते पावनाः जनाः ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

(८)

लभन्ते वैभवं भक्तिं प्रभजन्तो यमुत्तमाः ।
पाञ्चजन्यं शुभं शङ्खं स्मरामि श्रीहरिप्रियम् ॥

श्रीपाञ्चजन्याष्टक

(१)

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के कर-कमलों में सुशोभित अनन्त (अपार) शक्ति सम्पन्न श्रीहरिप्रिय मङ्गलमय पाञ्चजन्य शङ्ख का स्मरण करते हैं ।

(२)

अपने गम्भीर घोष मात्र से सर्वत्र विजय प्राप्त कराने वाले श्रीहरिप्रिय परम शुभकारी पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर स्मरण करते हैं ।

(३)

अज्ञान रूप अन्धकार को हरण करने वाले तथा शास्त्र-ज्ञान प्रदान करने वाले श्रीहरिप्रिय परम शुभकारी पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ।

(४)

दक्षिणावर्ती रूप तथा दिव्य धवलिमा से शोभित और श्रीगोविन्द में रति (प्रेम) कराने वाले श्रीहरिप्रिय माङ्गलिक पाञ्चजन्य शङ्ख का हम भजन स्मरण करते हैं ।

(५)

शरणागत लोगों के हित करने हेतु निरन्तर कटिबद्ध रहने वाले श्रीहरि प्रिय परम शुभ पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर भजन सेवन करते हैं ।

(६)

सुन्दर दिव्य ध्वनि करने वाले और समस्त देवगणों द्वारा परिसेवित श्रीहरिप्रिय मंगलरूप पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ।

(७)

जिनके नाम स्मृति एवं जयध्वनि करने मात्र से मनुष्य परम पवित्र बन जाते हैं उन श्रीहरि-प्रिय शुभप्रद पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ।

(८)

जिनका श्रेष्ठजन भली प्रकार से भजन स्मरण करते हैं, वे श्रीहरिभक्ति एवं अनन्त वैभव को प्राप्त करते हैं । उन श्रीहरिप्रिय मङ्गलमय पाञ्चजन्य शङ्ख का हम निरन्तर भजन स्मरण करते हैं ।

(६)

पाञ्चजन्याष्टकं स्तोत्रं भक्ति-ज्ञानप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीतुलसीमहिमाष्टकम्

(१)

वृन्दां प्रसिद्धां सरसां सुगन्धां
प्रफुल्लितां पल्लवमञ्जरीभिः ।
गोविन्दपादाम्बुजयोश्चरन्तीं
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ॥

(२)

संसारदावानलदग्धजीवान्
निजप्रभावेण सुखीकरोति ।
या दिव्यरूपा हरिलोकदा तां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ॥

(३)

भक्तै र्महाभागवतै र्निषेव्यां
कृष्णाऽङ्घ्रियुग्मार्चनसुप्रसन्नाम् ।
सुशोभमानाञ्च हरेः शिलायां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ॥

(४)

यस्याऽर्चनात्संसृतितीव्रतापा-
न्मुक्ता भवन्तीह जना नितान्तम् ।
कृष्णप्रियां तामतिशक्तिरूपां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ॥

(६)

भगवत्प्रीति प्रदान करने वाले इस पाञ्चजन्याष्टक की रचना आचार्य-चरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने की ।

*

श्रीतुलसीमहिमाष्टक

(१)

वृन्दा नाम से सुप्रसिद्ध सरस सुगन्ध वाली, हरित पत्रों और मञ्जुल (मञ्जरी) से प्रफुल्लित श्रीगोविन्द के श्रीचरणों में समर्पित की गई हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(२)

संसार रूप दावानल से परिदग्ध जीवों को अपने प्रभाव से सुखी करती हुई जो दिव्य स्वरूपा है तथा श्रीहरि के लोक (गोलोक धाम) को प्रदान करने वाली उस हरिप्रिया तुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(३)

महाभागवत भक्तों द्वारा परिसेवित, भगवान् श्रीकृष्ण युगल चरणार-विन्दों की पूजन में आने से सुप्रसन्न चित्त वाली तथा श्रीशालग्राम शिला पर अर्पण की जाने से परम सुशोभित हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्क़ार करते हैं ।

(४)

जिसका अर्चन-पूजन करने से मनुष्य निश्चयात्मक रूप से संसार तापानल से मुक्त हो जाते हैं, उस श्रीकृष्णप्रिया शक्ति स्वरूपा हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(५)

यस्या द्रुमस्पर्शनदर्शनाभ्यां
यमस्य दूताः परितो द्रवन्ति ।
तां संसृतिव्याधिहरां वरेण्यां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ।।

(६)

गृह्णाति नैवाऽर्पितमन्तरा यां
राधामुकुन्दः सकलं पदार्थम् ।
एवञ्च नानागुणपुञ्जपूर्णां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ।।

(७)

श्यामाङ्गवर्णां हरिताभवर्णां
द्विरूपशोभायुतदिव्यरूपाम् ।
समस्तकल्याणकरीं च वृन्दां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ।।

(८)

यत्काष्ठमालां परिधाय कण्ठे
सद्-वैष्णवाऽऽग्र्या विचरन्त्यशङ्काः ।
तां सुप्रभावां वरणीयवृत्तां
हरिप्रियां श्रीतुलसीं नमामि ।।

(९)

रोगघ्नं भक्तिदं स्तोत्रं तुलसीमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(५)

जिसके पौधे के स्पर्श तथा दर्शन से ही यमराज के दूत चारों ओर से भाग जाते हैं, संसार की समस्त व्याधियों को हरण करने वाली उस परम पूजनीया हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(६)

भोग (नैवेद्य) में जिनको अर्पण किये बिना भगवान् श्रीराधामुकुन्द उन पदार्थों को ग्रहण नहीं करते, ऐसी नाना गुण-समूह से परिपूर्ण हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(७)

श्याम और हरित इन दोनों वर्णों से परिशोभित, दिव्य स्वरूपा, समस्त प्रकार से कल्याणकारिणी वृन्दा हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(८)

जिसकी काष्ठमयी माला को कण्ठ में धारण कर वैष्णव निशङ्क हो संसार में विचरण करते हैं, उस प्रभावशालिनी परम पूजनीया हरिप्रिया श्रीतुलसी को हम नमस्कार करते हैं ।

(९)

रोगों को हरण करने वाला तथा भक्ति प्रदान करने वाला इस तुलसी-महिमाष्टक स्तोत्र की रचना आचार्यप्रवर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने की ।

✻

श्रीगोपीचन्दनाष्टकम्

(१)

गोपीचन्दनं चारु पीतवर्णं सुखावहम् ।
हरेः प्रसादरूपञ्च गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(२)

द्वारावत्यां महापुर्यां समुद्भूतं सुमङ्गलम् ।
श्रीविष्णुचन्दनाऽऽख्यातं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(३)

श्रीगोपीचन्दनाऽऽख्यानं श्रुतिशास्त्रे प्रकीर्तितम् ।
श्रेयस्करं सदा लेप्यं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(४)

यत्तिलकाऽङ्कनेनाऽथ मनुजो हरिपार्षदः ।
भवेत्तं दिव्यमाहात्म्यं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(५)

प्रभोरङ्गाऽकिंतव्याप्त - विष्णुचन्दनमार्जना ।
गोपीभि र्द्वारकाऽऽख्यातं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(६)

यस्याऽऽलेपनमात्रेण तिलकेन यमः स्वयम् ।
प्रधावति सशंकस्तद् गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(७)

यमदूताः पलायन्ते सभया यस्य दर्शनात् ।
भक्तोपकारकं वन्द्यं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

श्रीगोपीचन्दनाष्टक

(१)

सुख-शान्ति प्रदान करने वाले सुन्दर, पीतवर्ण को लिये हुये गोपी-चन्दन का हम आश्रय ग्रहण अर्थात् उसको नित्य तिलक रूप से धारण करते हैं ।

(२)

महापुरी श्रीद्वारका में (भेट-द्वारका की गोपी तलाई) प्रादुर्भूत परम मङ्गल श्रीविष्णुचन्दन नाम से विख्यात श्रीगोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(३)

गोपीचन्दन का आख्यान श्रुति-स्मृति पुराणादि सभी शास्त्रों में वर्णित है, जो कि सदा लेपन (धारण) करने में कल्याणकारी है, उस गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(४)

जिस गोपीचन्दन से तिलक धारण करने पर मनुष्य श्रीहरि का पार्षद बन जाता है । उस दिव्य माहात्म्य वाले गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(५)

भगवान् श्रीकृष्ण के मङ्गलमय श्रीविग्रह के धारण किया हुआ श्री-विष्णुचन्दन गोपियों द्वारा प्रभु का अभ्यङ्ग (अभिषेक) करने पर श्रीगोपीचन्दन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उस गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(६)

जिसके आलेपन मात्र से अर्थात् तिलक करने से यमराज स्वयं भयभीत होकर दूर हट जाते हैं उस गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं।

(७)

गोपीचन्दन के तिलक धारण किये हुये व्यक्ति के दर्शन से यमदूत भयभीत होकर भाग जाते हैं, ऐसे भक्तजनोपकारक परम वन्दनीय गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(८)

वैष्णवानां महावित्तमातुराऽऽरोग्यदायकम् ।
मन्दानां शेमुषीकारं गोपीचन्दनमाश्रये ॥

(९)

मोक्षदं भक्तिदं स्तोत्रं श्रीगोपीचन्दनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

सर्वेश्वरपदाम्भोज-कृपया चाऽऽत्मसद्गुरोः ।
अनुग्रहेण ग्रन्थोऽयं युगलश्रीप्रबोधकः ॥
सरलो रोचको ज्ञेयो भक्ताह्लादहितावहः ।
प्रणीतः श्रद्धयाऽस्माभि ‘‘र्युगलस्तवविंशतिः’’ ॥२॥

(८)

वैष्णवों के परम धन, सब प्रकार से आरोग्य प्रदान करने वाले तथा मन्दबुद्धि नरों को श्रेष्ठ बुद्धि देने वाले गोपीचन्दन का हम आश्रय ग्रहण करते हैं ।

(९)

मोक्ष और भक्ति प्रदान करने वाले श्रीगोपीचन्दनाष्टक का श्रीनिम्बार्काचार्यचरण श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने निर्माण किया ।

श्रीयुगलस्तवविंशति, रचकर श्रीमहाराज ।
करी कृपा अनुपम यह, भक्तजनन के काज ।।
अर्थ हेतु श्रीचरण की, मैं भी आज्ञा पाय ।
श्रीयुगल-रस-वर्धिनी, भाषा दई बनाय ।।
अब भक्तन सों है विनय, करिये नितप्रति पाठ ।
सर्वेश्वर कृपया सदा, होंय चौगुने ठाठ ।।
राधामाधव के चरण, वन्दौं वारंवार ।
जन जन में इस ग्रन्थ का, होय प्रचार-प्रसार ।।
''सन्त'' गोविन्ददास की, एक यही है चाह ।
राधामाधवपदकमल, भक्तिसिन्धु अवगाह ।।
दो हजार-चालीस-त्रय, विक्रम संवत मान ।
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, वार भौम शुभ जान ।।
युगल विंशति की यह, भाषा सरल सुजान ।
श्रीयुगल रस वर्धिनी, टीका पूरण जान ।।

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्रचूडामणि, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र,
द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल,
भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित -

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ,
श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज का जन्म विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। आपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ़ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर आचार्य पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त-महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों, श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा।

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार, (वृन्दावन) उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाय को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता रहा है। इसी प्रकार सं. 2026 में व्रजयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ. भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन, श्रीरासलीलानुकरण, श्रीरामलीला आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढाया है उतना ही देवालयों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-सञ्चालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति डॉ. श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया था। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्द्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं, आप द्वारा रचित ३५ ग्रन्थ हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आपश्री निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और वचनामृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।

Print 'O' Land, JPR • 2210284, 2210486